❁ 27 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] सिर्फ इस संगम पर ही बाप खुद आकर कहते हैं, इस द्वारा मैं तुमको पढ़ाता हूँ। ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर, सब आत्माओं का बाप भी वही है। यह समझ की बात है ना। देखने में तो कुछ नही आता। आत्मा ही है मुख्य और वह अविनाशी है। शणीर तो विनाशी है। अभी वह अविनाशी आत्मा बैठ पढ़ाती है। भल तुम सामने देखते हो यह तो साकार में शरीर बैठा है परन्तु यह तुम जानते हो, यह ज्ञान देहधारी नहीं देते हैं। ज्ञान देने वाला विदेही बाप है।

2] बाप खुद बैठ पढ़ाते हैं। कहते हैं मैं सब आत्माओं का बाप हूँ, जिसको तुम देख नहीं सकते हो। समझते हो वह विदेही है। ज्ञान, आनन्द, प्रेम का सागर है। वह कैसे पढ़ायेंगे। बाप खुद समझाते हैं– मैं कैसे आता हूँ, किसका आधार लेता हूँ? मैं कोई गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ। मैं कभी मनुष्य वा देवता नहीं बनता हूँ। देवता भी शरीर लेते हैं। मैं तो सदैव अशरीरी ही रहता हूँ। मेरा ही ड्रामा में यह पार्ट है, जो मैं कभी पुनर्जन्म में नहीं आता हूँ। तो यह समझ की बात है ना। देखने में तो आता ही नहीं।

3] बाप कहते हैं अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है तो आत्मा को ही देखो। इन जिस्मानी नेत्रों से देखो ही नहीं। हम सब आत्मायें भाई-भाई हैं। विकार कैसे करें। हम अशरीरी आये थे, फिर अशरीरी बनकर जाना है। आत्मा सतोप्रधान आई गी, सतोप्रधान बनकर जाना है स्वीट होम। मुख्य है ही पवित्रता की बात।

4] जब तक सतोप्रधान नहीं बने हो तब तक यह पद पा नहीं सकेंगे।

5] भगवानुवाच– मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ। सर्वव्यापी तो 5 विकार हैं, यह बड़ी भारी भूल है। गीता का भगवान् कृष्ण नहीं, परमपिता परमात्मा शिव है। इन भूलों को सुधारो तो देवता बन जायेंगे। परन्तु ऐसे कभी कोई बच्चे ने लिखा नहीं है कि ऐसे हमने समझाया कि इन भूलों के कारण ही भारत पावन से पतित बना है। वह भी बताना पड़े। भगवान सर्वव्यापी हो कैसे सकता। भगवान तो एक है जो सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरू है। कोई भी देहधारी को सुप्रीम फादर, टीचर, सतगुरू कह नहीं सकते।

6] बाबा खुद कहते हैं मेरे तो बाजू में एकदम शिवबाबा बैठा है, तो भी मैं याद नहीं कर सकता हूँ, भूल जाता हूँ। समझता हूँ मेरे साथ बाबा है। फिर मुझे भी तो याद करना पड़ता है, जैसे तुम करते हो। ऐसे नहीं, मैं तो साथ हूँ, इसमें ही खुश हो जाना है। नही, मुझे भी कहते हैं– निरन्तर याद करो। साथ वाले तुम रूसतम हो, तुमको तो और ही जास्ती तूफान आयेंगे। नहीं तो बच्चों को कैसे समझा सकेंगे। यह सब तूफान तो तुमसे पास होंगे। मैं उनके इतने नज़दीक बैठे हुए भी कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकता हूँ तो फिर दूसरा कौन बनेगा। यह मंज़िल बहुत ऊंची है। ड्रामा अनुसार सब पुरूषार्थ करते रहते हैं। भल कोई ऐसी कोशिक करके दिखाये– बाबा, हम आपसे पहले कर्मातीत अवस्था को पाकर यह बनकर दिखाते हैं। हो नहीं सकता। यह ड्रामा बना बनाया है।

7] समय प्रति समय मालिकपन की स्मृति को भुलाकर वश में करने वाला यह मन है इसलिए बाप का मन्त्र है **मनमनाभव।** मनमनाभव रहने से किसी भी व्यर्थ बात का प्रभाव नहीं पड़ेगा और सर्व खजाने अपने अनुभव होंगे।

✺ योग-

1] – – –

❁ 27 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

✺ धारणा-

1] यह भी गायन है– मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार.... । कब आकर मनुष्य को देवता बनाते हैं? वहीं सर्व की सद्गति करने वाला है, यह तो पक्का निश्चय होना चाहिए। क्या आकर कहते हैं? सिर्फ कहते हैं मनमनाभव। उसका अर्थ भी समझाते हैं और कोई भी अर्थ नहीं समझाते। तुमको सतगुरू अकाल मूर्त बैठ समझाते हैं इस देह द्वारा कि अपने को आत्मा समझो, तो यह समझना चाहिए।

2] यह बातें घड़ी-घड़ी भूल न जाओ। परन्तु माया दुश्मन खड़ी है, घड़ी-घड़ी भुला देती है। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ, तो माया भी शक्तिमान है। वह भी आधाकल्प तुम पर राज्य करती है, भुला देती है इसलिए रोज-रोज बाप को समझाना पड़ता है, रोज सुज़ाग न करे तो माया बहुत नुकसान कर दे। खेल है पवित्र और अपवित्र का। अब बाप कहते हैं अपनी चलन सुधारने के लिए पवित्र बनो। काम विकार के लिए कितने झगड़े होते हैं।

3] मनुष्य कहते हैं रोज वही बात समझाते हैं, यह तो ठीक है। परन्तु जो समझाया जाता है, उस पर चलें भी ना। करने के लिए समझाया जाता है। परन्तु कोई चलते थोड़ेही है तो जरूर रोज रोज समझाना पड़े। ऐसे थोड़ेही कहते हैं– बाबा आप तो रोज समझाते हो वह हमने अच्छी रीति समझ लिया है, अब हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। आप छूटे। ऐसे कहते हैं क्या? इसलिए बाबा को रोज समझाना पड़ता है। बात तो एक ही है। परन्तु करते नहीं हैं ना। बाप को याद ही नहीं करते हैं। कहते हैं– बाबा, घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बाप को घड़ी-घड़ी कहना पड़ता है याद दिलाने लिए।

4] लड़ाई लगेगी ही तब, जब तुम नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सतोप्रधान बनेंगे। ज्ञान तो एक सेकण्ड का है। बेहद के बाप को पाया, अब उनसे बेहद का सुख तब मिलेगा जब पवित्र बनेंगे। पुरूषार्थ अच्छी रीति करना है।

5] सारा समय शिवबाबा को बैठ याद करो और कोई बात ही नहीं करो। बस बाबा लड़ाई से पहले मैं कर्मातीत अवस्था को पाकर दिखाऊंगा।

6] बाप तुम बच्चों को भिन्न-भिन्न प्रकार से रोज़ समझाते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, अपने को सुधारते जाओ। रोज़ रात को पोतामेल देखो, सारे दिन में कोई आसुरी चलन तो नहीं चली?

✺ सेवा-

1] **तुम भी एक-दो को यही समझाओ**– अपने को आत्मा समझ परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें, और कोई उपाय नहीं। शुरू और अन्त में यही बात कहते हैं। याद से ही सतोप्रधान बनना है।